

Dr. Sunil K. Srivastava

Study material

Assistant Professor (Guest)

B.A. Part-II (H)

Dept. of Psychology

Paper - IV

D.B. College Jaynagar

Date: - 19-8-20

L.N.M.U. Varbhanga

## Structuralism

### Basic concepts of Structuralism:-

पुण्ड्र का मनोविज्ञान के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण मनोविज्ञान को क्रमबद्ध एवं एक प्रयोगात्मक विज्ञान (Experimental Science) का दर्जा देना था। उनके इस क्रमबद्धता की झलक उनके प्रसिद्ध पुस्तक "आउटलाइन ऑफ साइकोलाजी" (Outline of Psychology) में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में उन्होंने क्रमबद्ध मनोविज्ञान के मौलिक तत्वों का उल्लेख निम्नांकित पांच भागों में बाँटकर किया।

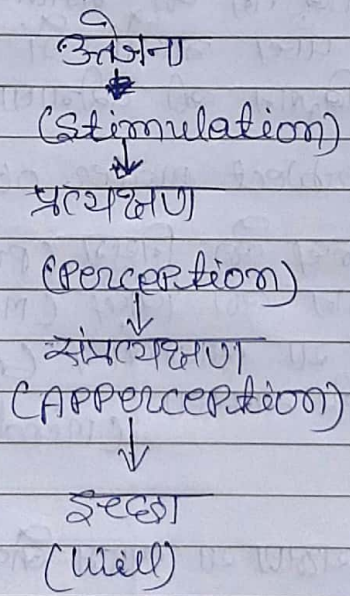
- (1) मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु (Definition of subject matter of Psychology)
- (2) सम्बन्ध के नियम (Principles of connection)
- (3) मनोविज्ञान की विधि (Method of Psychology)
- (4) संप्रत्यक्ष या आत्मबोध (Apperception)
- (5) मन-शरीर समस्या (Mind body problem)

### संप्रत्यक्ष या आत्म-बोध (Apperception):-

पुण्ड्र द्वारा प्रतिपादित संप्रत्यक्ष के सिद्धान्त का आचार्य हर्षद्वी (Harshadvi) द्वारा प्रतिपादित संप्रत्यक्ष (Apperception) का संप्रत्यक्ष (Concept) है। बोरिंग (Boring, 1930) ने यह स्पष्ट किया है कि पुण्ड्र के लिए संप्रत्यक्ष के तीन पहलु हैं:- एक घटना के रूप में संप्रत्यक्ष (Apperception of Phenomenon), दूसरे संज्ञान के रूप में संप्रत्यक्ष (Apperception as cognition)



तथा क्रिया के रूप में संप्रत्यक्षण (apperception वर्य activity)। एक घटना के रूप में संप्रत्यक्षण से तात्पर्य चेतना के केंद्र (Focus) से होता है। दूसरे शब्दों में, चेतन में किसी विशेष तत्व पर संकेन्द्रित (Focus) करना ही संप्रत्यक्षण कहलाता है। आजकल इस ध्यान (attention) का अर्थ है। इसका मतलब यह हुआ कि संप्रत्यक्षण के द्वारा चेतन में कुछ तत्वों या उद्दीपकों को संकेन्द्रित (Focus) करना ही संप्रत्यक्षण कहलाता है। आजकल इस ध्यान (Attention) का अर्थ है। इसका मतलब यह हुआ कि संप्रत्यक्षण के द्वारा चेतन में कुछ तत्वों या उद्दीपकों को संकेन्द्रित (Focus) किया जाता है तथा उसे प्रकट बनाया जाता है। इस अर्थ में संप्रत्यक्षणालम्बक प्रतिक्रिया (apperceptive reaction) का सामान्य स्वरूप इस प्रकार होता है।



संज्ञान (Cognition) के रूप में संप्रत्यक्षण चेतन या मानसिक प्रक्रिया का एक संज्ञानालम्बक कारक (cognitive factor) होता है। इस अर्थ में चेतन की संरचना में तत्वों का संश्लेषण (Synthesis) ही संप्रत्यक्षण (apperception) कहलाता है। संप्रत्यक्षण का स्वरूप विश्लेषणात्मक (analytical) भी होता है। निर्णय (Judgement) एक तरह का विश्लेषणात्मक



संप्रत्यक्षण (analytical apprehension) है क्योंकि  
 इसके द्वारा चेतन के अंतर्वस्तु (concept) को  
 आसानी से अलग कर लिया जाता है एक  
 क्रिया के रूप में संप्रत्यक्षण हमेशा एक  
 सक्रिय प्रक्रिया होती है तथा संप्रत्यक्षण के  
 बाद हमेशा कोई न कोई क्रिया आवश्यक होती है।  
 अतः चेतन रूप सति में संप्रत्यक्षण एक तरह  
 का सक्रिय प्रवाह है (active character) है।